International Journal of Advance and Applied Research (IJAAR)
Peer Reviewed Bi-Monthly

ISSN – 2347-7075
Impact Factor – 5.136
Vol.4 No.3 Jan - Feb 2017

'सेज पर संस्कृत' में साध्वियों का जीवन दर्शन

प्रा. डॉ. हणमंत महादेव सोहनी
सदाशिवराव मांडलिक महाविद्यालय, मुरगूड, तह. कागल, जिला. कोल्हापुर
Email- sohanihanmant1@gmail.com

प्रस्तावना :

साहित्य और मानव जीवन का गहरा संबंध रहा है । मानव जीवन की प्रत्येक घटना का दर्शन साहित्य में प्रतिबिंबित होता है । मानवी जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ हैं । आधुनिक युग में समस्याओं का जाल मानव के चारों ओर फैला हुआ है । अत: मानव हर पल नई – नई समस्याओं से जूझता –उलझता रहता है । साहित्यकार साहित्य की निर्मिती के लिए समाज और अपने जीवन से सामग्री ग्रहण करता है । वह अपनी साहित्य कृतियों पर अपने व्यक्तित्व की अमिट छाप डाले बिना नहीं रह सकता । प्रस्तुत छाप उस साहित्यकार को सदियों तक जीवित रखती है । साहित्यकार अपनी साहित्य कृति के द्वारा नई विचारधारा और नई दृष्टि को मानव के संमुख प्रस्तुत करता है । साहित्यकार की इस प्रगतिशील विचारधाराओं से मानव परिचित होता है ।

हिंदी उपन्यास साहित्य के विकास में महिला लेखिकाओं का अमूल्य योगदान रहा है । प्रस्तुत महिला हिंदी लेखिकाओं के साहित्य में स्त्री - जीवन से जुड़ी भिन्न - भिन्न समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत हुआ है । इनमें एक महत्त्वपूर्ण नाम मधु काँकरिया का है, जो समकालीन महिला कथाकारों में अलका सरावगी, राजी सेठ, कुसुम कुमार, सुषम बेदी, कृष्णा सोबती, चित्रा मुद्गल, अपना विशिष्ट स्थान रखती हैं।

समकालीन महिला साहित्यकारों में मधु काँकरिया का हिंदी कथा-साहित्य सबसे अधिक चर्चित और प्रभावित है । मधुजी नें अपनी साहित्य रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त रूढी परंपरावादी विचारधारा एवं सड़ी-गली कुरीतियों का खुलकर विरोध किया है। इनकी रचनाओं में भारतीय समाज का यथार्थ चित्रण हुआ है । इनकी रचनाएँ भारतीय समाज के भीतर टूटते हुए आदर्शों एवं मान्यताओं का प्रतिबिम्ब है ।

स्त्री के बारे में कई चिंतकों ने अपने मतों को व्यक्त किया है, जिसमें प्रसिद्ध फ्रांसीसी लेखिका सीमोन के विचारों के अनुसार "स्त्री पैदा नहीं होती, बनाई जाती है "।[1] स्त्री को बचपन से ही मानसिक तौर पर उसके स्त्री होने का अहसास दिलाया जाता है। पितृ-सत्तात्मक समाज स्वयं की सत्ता को बनाये

रखने के लिए स्त्री को जन्म से ही अनेक नियमों से घेर देता है। फ्रांसीसी लेखिका सीमोन लिखती हैं, "औरत जन्म से ही औरत नहीं होती, बल्कि औरत बनाई जाती है। कोई भी जैविक, मनोवैज्ञानिक या आर्थिक नियति आधुनिक स्त्री के भाग्य की अकेली नियंता नहीं होती।" [2] मधु कांकरिया द्वारा लिखित 'सेज पर संस्कृत' में नारी चेतना का दर्शन हो जाता है ।

मधु कांकरिया द्वारा लिखित 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में नारी चेतना का सामान्य परिचय दिया गाया है । प्रस्तुत उपन्यास का प्रथम संस्करण सन् 2010 में हुआ और प्रथम आवृत्ति सन् 2014 में राजकमल प्रकाशन प्रा. लि., नई दिल्ली से प्रकाशित हुई |

नारी प्रत्येक युग में समाज एवं साहित्य का अभिन्न अंग बनी रही है । समाज एवं साहित्य, कला और जीवन दर्शन आदि से नारी का बहुत गहरा संबंध रहा है । उसके अभाव में सभ्यता की कल्पना करना मानव को संभव नही है । साहित्य और समाज से नारी को अलग करने की कल्पना भी नहीं की जा सकती । पुराणों और संस्कृत महाकाव्यों में नारी को अत्यंत गरिमामयी रुप में चित्रित किया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में नारी को गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त हुआ है । नारी को देवी के समान स्थान दिया गया और उसे पूजनीय माना गया है । नारी के संदर्भ में कहा है कि - "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवताः ।" अर्थात् जहाँ नारियों को सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है, वहाँ स्वयं ईश्वर का निवास होता है । ऐसी लोगों की धारणा है । लेकिन करनी और कतनी में अंतर दिखाई देती है । परिवर्तन प्रकृति का नियम है । जैसे - जैसे परिस्थितियों में परिवर्तन होता गया, वैसे - वैसे स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण में भी परिवर्तन आता गया ।

वैदिक काल में स्त्री को देवी के समान स्थान देकर उसकी पूजा की जाती थी । अत: उस काल में नारियों को अत्यंत गौरवपूर्ण स्थान मिला था, वहीं गौरवपूर्ण स्थान धीरे – धीरे कम होकर नारियों के सम्मान का निरंतर अवमूल्यन होने लगा है । पुरुष प्रधान संस्कृति ने नारी को गुलामी में रखने का प्रयास अनादिकाल से जारी रखा है । यही प्रक्रिया कम अधिक मात्रा में आज भी समाज में दृष्टिगत होती है ।

हिंदी-साहित्य के स्त्री विमर्श के सम्बन्ध में कृष्णदत्त पालीवाल अपनी कृति में स्त्री व्यथा के संदर्भ में लिखते हैं, कि "स्त्री की व्यथा पर आधुनिक काल के सभी रचनाकारों ने लेखनी उठाई है | ....लोक हृदय और लोक चिंता रचनाकर्ता की सच्ची पहचान है | ....साहित्य हमारे मानुष भाव की रक्षा का प्रयत्न है-जो हमें बेहतर मनुष्य बनाता है, भाव परिष्कार करता है और मनुष्यता की उच्च भूमि पर ले जाकर खड़ा कर देता है |"[3] यहा लेखिका ने नारी चिंतन को व्यक्त किया है |

डॉ. शोभा पालीवाल भारतीय समाज के आदर्शों एवं मान्यताओं के संदर्भ में अपने मत को लिखती हैं, "क्षमता के साथ विचार आता है, वह पाठक वर्ग को उस चिंता से जोड़ता है, जो चिंता रचनाकार की चिंता है, जो चिंता हर एक सामाजिक व्यक्ति की चिंता है । इसलिए रचना में आया हुआ

समाज, वह समाज नहीं होता, जिसे हम अपनी आँखों से देख रहे हैं, बल्कि वह समाज होता है, जिसे हम नित्य देखकर भी अनदेखा करते हैं । रचना का महत्त्व यही है कि वह हमारे समाज को, समाज के उन अवयवों को और उन बिंदुओं को हमारे सामने खोलकर रखता है, जिन पर हमारी दृष्टि उस रुप में कभी नहीं गई, जिस रुप में रचनाकार की दृष्टि ने उसे देखा है।"[4] अत: रचनाकार की दृष्टि महत्वपूर्ण है|

'सेज पर संस्कृत' उपन्यास में एक ऐसे परिवार का चित्रण किया गया है, कि परिवार के मुखिया और पुत्र ऋषि की असामयिक मृत्यु होने के पश्चात माँ पूर्णिमा देवी पर सारे परिवार का उत्तरदायित्व आ जाता है। उसकी दो पुत्रियाँ हैं और घर में कोई पुरुष नहीं है, जो परिवार की रक्षा कर सके | प्रस्तुत स्थिति के संदर्भ में वह कहती है, "अरे जिस समाज ने चार भुने हुए चने के लिए धर्मात्मा तुलसीदास को भी नहीं छोड़ा वह हमें क्या बख्शेगा ?"[5] अता: जिस घर में पुरुष नहीं उस घर की महिला का जीना कठिन होता है|

संघमित्रा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रही है । वह विवाह को एक सामाजिक संस्कार मानती है और इस बात का समर्थन नहीं करती कि सारा परिवार दीक्षा ले ले। संघमित्रा साध्वी जीवन एवं दीक्षा के विरुद्ध है | संघमित्रा अपनी छोटी बहन जिसकी उम्र ग्यारह वर्षी की है उसे दीक्षा से बचाना चाहती है । संघमित्रा के कई प्रयास करने के बाद भी छोटी बहन छुटकी को माँ के प्रभाव से मुक्त नहीं कर सकती| माँ और छुटकी दोनों दीक्षा लेने के लिए कलकत्ता चले जाते हैं । संघमित्रा छुटकी की दीक्षा लेने का विरोध करती है। परंतु वह असफल होती है |

परिवार में पुरुष न होने के कारण जिस स्थिति का उन्हें सामना करना पड़ता है, उसके संदर्भ में वह कहती है, "यह आदमियों की दुनिया है जो रोटी तो देगी पर बोटी नोच लेगी । फटी चदरी-सा यह घर अब न तुम्हारे सँभले-सँभालेगा और न मेरे ।"[6] इससे स्पस्ट है कि समाज के पुरुषों की अकेली नारी के प्रति क्या मानसिक्ता होती है ।

माँ अपनी पुत्रियों को लेकर आर्थिक समस्या के कारण असुरक्षा की भावना से इस हद तक ग्रस्त हो जाती है, कि वह अपनी पुत्रियों का मुक्तिमार्ग अध्यात्म को ही समझने लगती है। इसी करण वह साध्वी बन जाना चाहती है । वह यह चाहती है कि उसकी दोनों पुत्रियाँ संघमित्रा और छुटकी साध्वी मार्ग को अपना लें, जिससे उनका जीवन सुरक्षित रह सके | माँ को भी उसके उत्तरदायित्वों से सम्मानसहित मुक्ति प्राप्त हो जाएगी । इस संदर्भ में वह कहती है, "कितनी वाहियात चीज़ है यह शादी । मैं नहीं चाहती कि तुम इसमें फँसो, मेरी ही तरह विधवा हो और तिल-तिलकर अपने बच्चे को मरते हुए देखो। संसार में रहने का मतलब ही है - दुखों के दलदल में फँसना ।"[7] अत: माँ को लगता है कि संसार के दुखों के दलदल में फँसने से बेहतर साध्वी का जीवन है|

सारांश:- मधु कांकरिया हिंदी साहित्य की एक लब्ध प्रतिष्ठित लेखिका हैं । मधु काँकरिया के कथा-साहित्य में स्त्री-जीवन के संघर्ष का चित्रण किया गया है| अंत में इतना ही कहूँगा कि उपन्यास कि विषय वस्तु काफी संवेदनशील है और लेखिका ने बेहतरीन तरीके से इसे प्रस्तुत किया है । उपन्यास पठनीय है और पात्र सारे जीवंत हैं । 'सेज पर संस्कृत' में साध्वियों का जीवन दर्शन गहराई से मधु कांकरिया ने चित्रित किया है। आम स्त्री और साध्वी इनके जीवन की कई घटनाओं का अंकन प्रस्तुत उपन्यास में लेखिका ने चित्रित किया है। साध्वी का जीवन नारकीय जीवन जैसा ही होता है, बात को लेखिका ने अपनी रचना के द्वारा प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

धीरे-धीरे पुरुष-प्रधान समाज अपने प्राचीन आदर्शों को भूलने लगा। अब पुरुष के लिए स्त्री मात्र भोग्या रह गई । पुरुष अपनी स्वच्छन्दता का उपभोग करता रहा तथा स्त्री वर्जनाओं की परिधि में क़ैद रही । मधु कांकरिया की रचनाओं में विचार और संवेदना की नवीनता तथा समाज में व्याप्त अनेक ज्वलंत समस्याओं को चित्रित किया हैं । धार्मिक आडंबरों के चक्रव्यूह में फँसी स्त्री मन की व्यथा 'सेज पर संस्कृत' उपन्यास के परिप्रेक्ष्य में पाई जाती है|

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. सीमोन द बोउवार, अनुवादक - प्रभा खेतान, स्त्री उपेक्षिता, पृष्ठ 121
2. वही पृष्ठ 121
3. कृष्णदत्त पालीवाल, उत्तर आधुनिकता की ओर, पृष्ठ 139
4. डॉ. शोभा पालीवाल, अमृतलाल नागर के उपन्यासों में सामाजिक चेतना, पृष्ठ 114
5. मधु कांकरिया, सेज पर संस्कृत पृष्ठ 51
6. वही, पृष्ठ 50-51
7. वही,पृष्ठ 45-46